इंदौर। सिटी बस के कर्मचारियों के लिए आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए प्रो.ई.वी.स्वामीनाथन।

रामगंज मण्डी। उप पुलिस अधीक्षक प्रवीण कुमार जैन को 'रक्षा-सूत्र' बांधते हुए ब्र.कु.मंजु बहन।

गरोठ। समाज सेवी उपाध्याय हरीश जी को 'रक्षा-सूत्र' बांधते हुए ब्र.कु.पूनम बहन।

रतलाम। डिवीजनल इंडस्ट्रीज एसोसिएशन में आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करने के पश्चात् समूह चित्र में हैं ब्र.कु.प्रभा मिश्रा, ब्र.कु.सविता बहन, ब्र.कु.आस्था बहन तथा अन्य।

हमीरपुर। जिलाधिकारी बी.चंद्रकला को 'राखी का संदेश' भेंट करते हुए ब्र.कु.पुष्पा बहन एवं ब्र.कु.आशा बहन।

धमतरी। 'राजयोग शांति अनुभूति शिविर' का उद्घाटन करते हुए गुप्ता समाज के अध्यक्ष अजय गोस्वामी, राजेन्द्र गुप्ता, ब्र.कु.सरिता बहन तथा अन्य।

अपना लक्ष्य....

पृष्ठ 8 का शेष

लक्ष्य तक पहुंच गए हैं? बिना दिशा के उत्साह उस जंगली की तरह है, जिससे मायूसी ही मिलती है। लक्ष्य दिशा का एहसास कराते हैं।

बिना लक्ष्य के हमारा जीवन भटकन में पूरा हो जाता है। न ही लक्ष्य न ही दिशा हमें अवदशा में पहुंचता है। लक्ष्य बनाना कितना आवश्यक है और उसे हांसिल कैसे करें? उनकी योजना क्या हो? कैसे उसे प्राप्त कर सकते हैं?

आज इंसान अपने स्वप्न को साकर में देखना चाहता है। कई इच्छाएं करते हैं कामनाएं करते हैं। मैं इस लक्ष्य का प्राप्त कर लूं, लोग अक्सर इच्छा या सपने को लक्ष्य समझने की भूल करते हैं। सपने और इच्छाएं सिर्फ चाहत है। चाहतें कमजोर होती है। चाहतों में मजबूती तब आती है, जब वे इन बातों की बुनियाद पर टिकी होती है। लक्ष्य पाने के लिए पांच ''डी'' को जीवन में अपनाना होगा।

महान मस्तिष्क उद्देश्यों से भरे होते हैं और अन्य लोगों के पास केवल इच्छाएं होती हैं। - वाशिंगटन इर्विंग

1. दिशा, 2. समर्पण, 3. दृढ़ निश्चय, 4. अनुशासन, 5. समय-सीमा।

यही पांच 'डी' अपने में होना, मन चाहे लक्ष्य आपके साथ रहता। यही वे बातें हैं, जो इच्छा और लक्ष्य में अंतर करती है। लक्ष्य वे सपने हैं, जिनके साथ समय-सीमा और कार्य-योजना जुड़ी होती है। लक्ष्य मूल्यवान या मल्यहीन हो सकते हैं। सपनों को असलियत का रूप चाहत नहीं, बल्कि लग्न देती है।

सपनों को हकीकत में बदलने वाले कदम -

1. निश्चित और साफ लक्ष्य लिखें।
2. इसे हासिल करने का प्लान बनाएं।
3. पहली दो बातों को रोज दो बार पढ़ें।

ज्यादातर लोग अपने लक्ष्य क्यों नहीं चाहते? - कुछ करने की कोशिश करके असफल हो जाने वाले लोग उन लोगों से लाख गुना बेहतर हैं, जो कुछ किए बिना सफल हो जाते हैं। - लॉयड जोस।

लोगों द्वारा लक्ष्य तय न किए जाने की कई वजहें होती हैं जैसे कि 1. निराशावादी नजरिया संभावनाओं की बजाए हमेशा रास्ते की बाधाओं को देखना।

2. असफलता का डर - यह सोच कर कि 'अगर मैं नहीं कर सका तो क्या होगा?' लोगों के अवचेतन मन में यह विचार रहता है कि अगर वे लक्ष्य तय नहीं करेंगे, तो असफलता भी नहीं मिलेगी, लेकिन ये लोग इस बात को नहीं समझते कि लक्ष्य का न होना असफलता की ही निशानी है।

3. सफलता का आतंक - खुद को कम करके आंकना या सफल जिंदगी को लेकर पली गई आशंकाओं के कारण भी कुछ लोगों के मन में असफलता या आतंक पैदा हो जाता है।

4. अभिलाषा की कमी - यह हमारे जीवन मूल्यों और साथ ही साथ एक भरपूर जिंदगी जीने की इच्छा के अभाव का नतीजा होती है। हमारा दिमाग हमें बढ़ने से रोकती है। एक मछुआरा या जो भी जब भी कोई बड़ी मछली पकड़ता तो उसे वापिस नदी में फेंक देता था और सिर्फ छोटी मछलियों को अपने पास रहने देता। उसकी इस अजीब हरकत को देखने वाले एक आदमी ने उससे पूछा कि वह ऐसा क्यों कर रहा है? इस पर उस मछुआरे ने जबाव दिया, 'मेरी कुड़ाही बहुत छोटी है'।

-क्रमशः

भारतीय संस्कृति की आत्मा है आध्यात्मिकता

मंदसौर। 'प्लेटिनम जुबली' कार्यक्रम में मंचासीन हैं ब्र.कु.डॉ.प्रभा मिश्रा, म.प्र.योजना आयोग के सदस्य सुधीर गुप्ता, ब्र.कु.हेमलता बहन तथा अन्य।

मंदसौर। भारती संस्कृति की आत्मा आधात्मिकता है। पाश्चत्य संस्कृति हमारी इस संस्कृति को तोड़ने का कार्य कर रही है।

उक्त उद्‌गार प्रख्यात टीवी. कलाकर ब्र.कु.डॉ.प्रभा मिश्रा ने संजय गांधी उद्यान में संस्था के 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में आयोजित प्लेटिनम जुबली समारोह का उद्घाटन करते हुए व्यक्त किए।

उन्होंने कहा कि आज देश में आध्यात्मिक क्रांति की आवश्यकता है। तभी देश पुन: विश्व गुरु बन सकता है। उन्होंने कहा कि शिक्षा का उद्देश्य सिर्फ पैसा कमाना नहीं होना चाहिए बल्कि व्यक्तित्व का विकास करना भी होना चाहिए, क्योंकि श्रेष्ठ विचारों से ही भाग्य बनता है। स्थानीय विधायक यशपाल सिंह सिसौदिया ने कहा कि यह ब्रह्माकुमारी बहनों की तपस्या का प्रतिफल है कि आज संस्था के अमृत महोत्सव के अवसर पर शहर के गणमान्य व्यक्ति यहां उपस्थित हैं। उन्होंने संस्था के मुख्यालय माउन्ट आबू में आयोजित शिविर के संस्मरण सुनाते हुए कहा कि वहां का अपनत्व, माधुर्य और मिठास भरा व्यवहार एक अदभुत अनुभव है और वहां की अनुभूतियों को याद कर आज भी मेरा हृदय भाव-विभोर हो उठता है। मध्य प्रदेश राज्य योजना आयोग के सदस्य सुधीर गुप्ता ने कहा की आज मनुष्य संसार की समस्याओं का समाधान करते-करते स्वयं भटक चुका है। और उसे इसकी सही दिशा ब्रह्माकुमारीज़ के माध्यम से मिलती है। इंदौर जोन की क्षेत्रीए समन्वयक ब्र.कु.हेमलता बहन ने कहा कि आज व्यक्ति स्वयं को और परमात्मा को न जानने के कारण ही वह सत्य से कोसों दूर चला गया है। जिसके कारण उसके जीवन में सुख-शांति नहीं है। जब हम वसुधैव कुटुम्बकम की भावना को साकार करेंगे, तब यह पूरा विश्व हमें अपना परिवार लगेगा। हमारी यही भावना इस धरा पर स्वर्ग को ले आयेगी। इस कार्यक्रम को नगरपालिका के अध्यक्ष कुसुम गुप्ता सहित अनेक वक्ताओं ने सम्बोधित किया और अपने-अपने विचार व्यक्त किए। इस कार्यक्रम में स्थानीय कलाकारों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति दी गई। मंच का कुशल संचालन ब्रजेश जोशी ने किया।

संबंधों में सुखभाग्य की निशानी

इंदौर। बैंक के सेवानिवृत कर्मचारियों के लिए आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु.उषा बहन।

इंदौर। तनाव के कारण मनुष्य के जीवन का सौंदर्य और आंतरिक शक्तियां नष्ट हो जाती है। जिसके कारण उसके जीवन से खुशी गुम हो जाती है।

उक्त उद्‌गार इंदौर की राजयोग शिक्षिका ब्र.कु.ऊषा बहन ने पंजाब नेशनल बैंक के सेवानिवृत्त अधिकारियों के लिए आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि आज हर व्यक्ति सम्बन्धों में और व्यवहार में मधुरता चाहता है तो उसे यही व्यवहार दूसरों से करना होगा, तभी उसके जीवन में इन गुणों की प्राप्ति होगी।

पंजाब नेशनल बैंक के पूर्व प्रबंधक बनवारी लाल जाजोदिया ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ एक ऐसी संस्था है जो हम सभी को आपस में प्यार से मिल-जुलकर चलना सिखाती है। इस गुण को धारण कर लेने से जीवन सुखमय बन जाता है।

इंदौर जोन की क्षेत्रीए समन्वयक ब्र.कु.हेमलता बहन ने कहा कि भगवान से प्यार न होना, हमारे आपसी सम्बन्धों में स्नेह की कमी को दर्शाता है। जिसे भगवान से प्यार होता है उसे सारे जहां से प्यार होता है।

मंच का कुशल संचालन ब्र.कु.अनिता बहन ने किया तथा इस अवसर पर बैंक के अनेक अधिकारी भी उपस्थित थे।